

डॉ० सुरेन्द्र वर्मा

डॉ० सुरन्द्र वर्मा

की तिपाइयॉ

राग-खटराग

— —

चित्राकन—डॉ० रवीद्र पगारे



साहित्यसंगम
इलाहाबाद

Rs 60=00

प्रकाशक साहित्य सगम नया 100 लूकरगज, इलाहाबाद-211001
सस्करण प्रथम 1997 © लेखक
मुद्रक जे० के० आर्ट प्रेस इलाहाबाद
मूल्य रुपये साठ मात्र

सुनती हो
यह खटराग रानी
तुम्ही को सोपता हूँ
सप्रेम

प्राक्कथन

वषो पहल भारत भूषण अग्रवाल न तुक्तक लिख थ जिन्हे बाद म कागज के फूल पुस्तक म सकलित किया गया। उनका आकार अग्रेजी म प्रचलित लिमरिक का था– दा बडी पक्तियॉ दा छाटी पक्तियॉ और पुन एक बडी पक्ति। राग–खटराग की प्रस्तुत तिपाइया म बीच की दो पक्तिया हटा दी गई ह और बात को तीन पक्तिया म ही कहन का प्रयत्न किया गया ह

एक विधा क रूप म नाम बशक नया हे पर तिपाइ का आकार नया नही हे। गायत्री मत्र म भी तीन ही पक्तियॉ ह। किन्तु गायत्री मत्र तिपाइ नही ह मत्र है।

कागज क फूल म तुक्तका क अतिरिक्त पद्य म लिखी हास्य व्यग्यात्मक अन्य सामग्री भी हे। इसमे दा तिपाइयॉ भी ह– य तिपाइयॉ इस प्रकार ह–

1 बडा हा या छाटा काम ता ह
नही हे दाम लेकिन नाम ता ह
मिट सार सहार राम ता ह।

2 न लना नाम अब तुम इल्म का
लिखा बस गीत हुक्क का चिलम का
अभी खुल जाएगा रास्ता फिल्म का

इनका नाम निस्सदह तिपाइ नही दिया गया हे। कितु हे य तिपाइयॉ ही। मुझ इन्हे देखकर बडी प्रसन्नता हुई। लगा कि मन तुक्तक स दा छाटी पक्तिया का हटा कर कुछ गलत नही किया। प्रस्तुत सग्रह म तिपाइयॉ प्राय छ पक्तिया म प्रस्तुत की गइ है। प्रत्यक पद का दा पक्तिया म तोड दिया गया ह। पढन मे प्रवाह का आनन्द लने क लिए यह आवश्यक हे कि पाठक पक्तियो पर न रुककर पदो पर रुके।

कइ वष पहले उज्जेन म प्रसिद्ध आलाचक/चितक डॉ० राम विलास शर्मा पधार थ। मेरी तिपाइया क प्रशसक डॉ० शिवमगल सिह सुमन न मुझस उन्ह अपनी कुछ तिपाइयॉ सुनाने क लिए कहा। बाद म चचा शब्द तिपाइ पर होन लगी। डॉ० शमा ने कहा कि इन कविताआ क लिए शब्द तिपाई ही ठीक है क्योकि अपनी बात रखन के लिए तिपाइ एक आधार प्रस्तुत करती ह।

इदौर के रवीद्र नाटय गृह की कला वीथिका मे मेर मित्र डॉ० रवीद्र पगार क व्यग्य चित्रो के साथ तीस स अधिक तिपाइया की प्रदशिनी हा चुकी है। दर्शको ने इसे खूब सराहा। यदा–कदा अपने अन्य मित्रो के साथ जब म इन तिपाइयो का सुनाता था तो उनका अच्छा मनोरजन हाता था। कितु इन तिपाइया का प्रकाशन सच बहुत देर म हा पा रहा हे।

म अपन प्रकाशक मित्र श्री ओकार स्वरूप चतुर्वेदी का आभार मानता हू कि व इन तिपाइया के प्रकाशन क लिए न कवल सहमत हुए बल्कि शीघ्रातिशीघ्र व रसिका तक इसे पहुँचा भी सक।

अत म दा शब्द डॉ० रवीद्र पगार क सबध मे। मर सहृदय मित्र डॉ० पगार नाक-कान-गले क डाक्टर ह। उन दिना वे इदार म रहत थे आर वहाँ व डाक्टरी के साथ-साथ रखाचित्र आदि भी बनाते थ। मेर आग्रह पर उन्होने अपनी पसद की कुछ तिपाइयो को चित्रित किया। म उनका हृदय स आभारी हूँ।

10 एच आइ जी
1-सकुलर राड
इलाहाबाद (उ० प्र० 211 001

—सुरेन्द्र वर्मा

भूमिका

१

पैर बने शब्दो के
नही मुर्दा लकडियॉ
        अजीब अजीब बाते
        विचित्र पुरुष–स्त्रियॉ
बैठ इन तिपाइयो पर
कसते है फबतियॉ

२

जी यह तिपाई है
जी को कडा करने की
        आपकी नासाज तबियत
        का भला करने की
जी यह तिपाई हे
मिट्टी का घडा धरने की



१

[illegible]

अपनी उत्तर-पुस्तिका म
        लिखती है परीक्षार्थिनी–
शीघ्र ही विवाह है
        मै हूँ सौभाग्याकाक्षिणी–
परीक्षक जी पास कर दो
        आपकी हूँ प्रार्थिनी।



२

हिप्पी हिदुस्तान मे

आए है ब्रिटेन से
बजाते है बैगो
        हिप्पी हिदुस्तान मे
        चूसते है मैगो
डरते है मच्छर से
हो न जाए डैगो





३

आप की सूझ

आप एक पहेली है
बडी अनबूझ—क्या कहिए—
        आपका सौदर्य और
        आपकी सूझ—क्या कहिए—
सिर पर लगाई है
घोडे की पूँछ—क्या कहिए ।



४

जा पहुचे जावरा

सगीत मे प्रवीण थे
उस्ताद श्री छाबरा
        किस्मत आजमाने को
        छोडा था आगरा
जाना था मुबई और
जा पहुँचे जावरा





५

मिस बहल

उनकी कक्षा मे बस
एक ही छात्रा थी मिस बहल
        क्योकि प्रोफेसर प्रेमानन्द का
        सिद्धान्त था सहल–
यानी वन थिग एट ए टाइम
एण्ड दैट डन वैल



६

घर और राजनीति मे

फिल्मो और नाटको मे बेशक
बडे कलाकार होते है
        कितु घर मे और राजनीति
        मे भी अदाकार होते हे
यहॉ पत्नियॉ रूठती है और
सासद नाराज होते है





७

चश्मा धूप का

उन्हे बडा नाज था
नजाकत का अपने रूप का
किस्सा मशहूर था
मुहल्ले मे मिसेज सूद का
चॉदनी रातो मे
लगाती थी चश्मा धूप का ।



८

तलाश

आदत है उनकी
कि अक्सर भूलते है
वे सबको और सब
उनको घूरते है
ऑख पर चढा हे
चश्मा वे ढूँढते है ।





९

दे दे रे दानी

ऐसी थी सगीत पिपासी
रत्नारानी
शीश नवाकर विनती करती
गुरु अभिमानी
नादिर दानी दे दे रे
दे दे रे दानी।



१०

किबडिया खोलो

सग साथ पाने को
वे गाती है सोलो
टेरती है बार बार
श्रीमती मिठबोलो
महाराजा ओ राजा
किबडिया खोलो





११

हकीम जी

कहने लगे हकीम जी
बडी है मॅहगाई
        गिजा तक तो बिकती नही
        क्या बिके दवाई–
हॅस के बोले
एक बीडी तो निकाल भाई।



१२

दर्शन की गगा

दर्शन की गगा मे
वे निर्बाध बहे
        अद्वैत मे रमे तो
        रमते ही गए
न मिली माया न
ब्रह्म ही भए।





१३

अविवाहित

गाली मत बको
सूखा छुआरा नही हूँ मै–
प्यारा हूँ बहुतो का
पत्नी-प्यारा नही हूँ मै–
केवल अविवाहित हूँ
जी क्वॉरा नही हूँ मै।

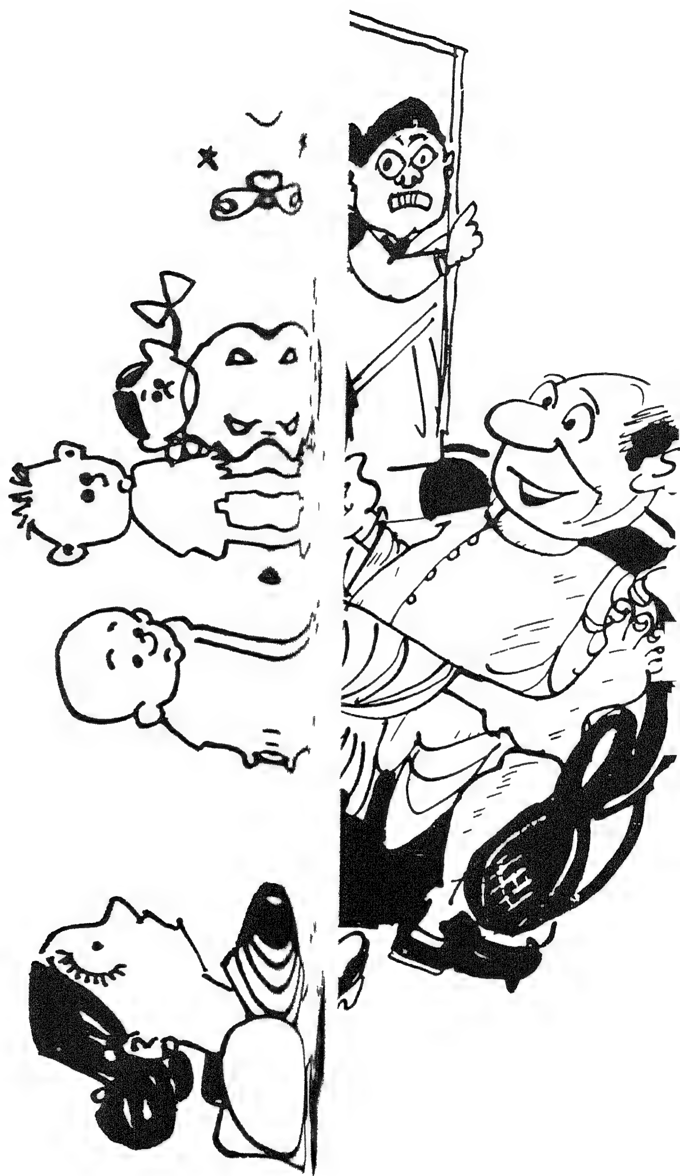


१४

मुर्गा पडोस का

कबूतरो का जोडा एक
करता था गुटुर गूँ
निसार एक दूसरे पर
जैसे लैला मजनूँ
मुर्गा पडोस का कुढा तभी
कुकुड़ूँ कुकुड कूँ।





१५

श्री लखपत जी

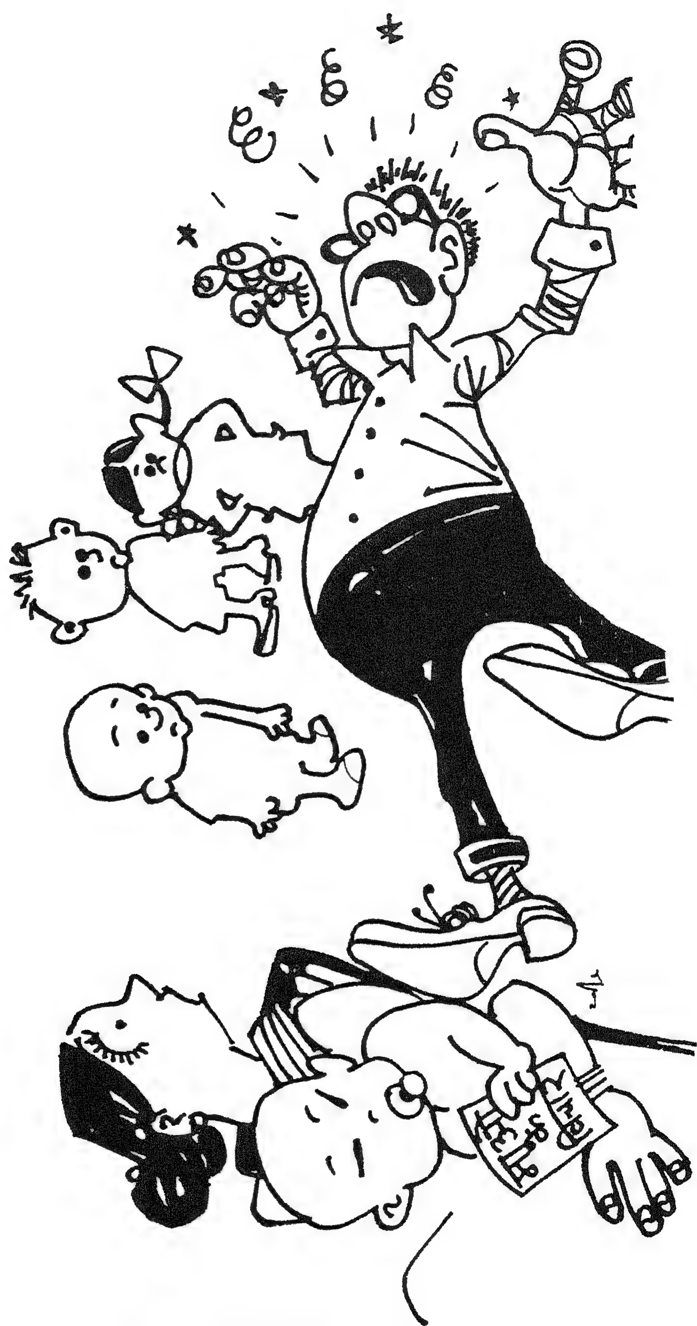
घर आए महमान हमारे
श्री लखपत जी
        मैने पूछा चाय पीएगे
        या शरबत जी–
पी लेगे शरबत ही
चा बनती जब तक जी



१६

कमालुद्दीन

तौलिया लपेट कर
कमालुद्दीन औलिया
        नहाने को दरिया मे
        उतरे थे शौकिया
धार बहुत तेज थी
सो बह गई तौलिया



१७

नियोजित परिवार

जैसी जो काटता है फसल
वैसी ही बोता है–
        तीन के बाद नियोजित परिवार
        ठीक ही सोचा है–
क्योकि ससार का हर चौथा बच्चा
चीनी होता है।



१८

लायक पिता

हमारे एक मित्र है
जस्टिस नायक
        पिता श्री तीन बेटो
        के लायक
नेता अभिनेता
और पार्श्व गायक।





१६

तबले का सीना

ताकत कम और गुस्सा ज्यादह
ऐसी थी मिस मीना–
क्रोधित हो वे पीटा करती थी
तबले का सीना–
तिरकिट तूना तिरकिट धीना
धागे तिरकिट धीना।



२०

अनुराग

मेरी एक मित्र है
मुझे अपना ही मानती है
सगीत मे रत्न है
और तबला भी जानती है
रागो मे श्रेष्ठ राग
वे अनुराग मानती है।





२१

आदम का बच्चा

दारेस्सलाम हो
या आदिस-अबाबा–
        लदन हो वाशिगटन
        काशी या काबा–
आदम का बच्चा बस
बेबी या बाबा ।



२२

कॉव कॉव

देखता है सुबह
और न देखता है शाम
        करने मे कॉव-कॉव होती
        जिन्दगी तमाम
हर आदमी के हलक मे
कौआ विराजमान

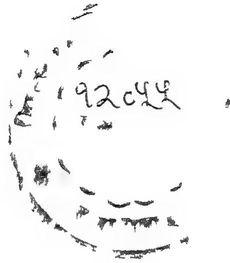




२३

अपना सगीत

न राग अलापते है
न ठेका लगाते है–
        हमारे सगीत की कुछ
        अलग ही बाते है–
हम तो गुरु-गुण गाते है
और हुकुम बजाते है ।





२४

काफी राग

पीते है काफी
पिलाते भी काफी
        गाते है काफी
        बजाते भी काफी
पाते है काफी
कमाते भी काफी





२५

मेज-पोश

कढाई का
ाकर एक नमूना
बोली जरा कर दो
बढाकर इसे दूना
जपोश बिना कढा
गता है सूना ।



२६

शुक-सारिका

सुर्ख चोच देखकर
शुक से बोली सारिका
अकेले ही खा लिया र
बीडा पान का
पान नही डार्लिग
यह तो रग है प्यार का





२७

व्यथा कथा

नीद नही आती हे
प्यास लगी है रानी
        सुनकर मेरी व्यथा-कथा
        बोली अभिमानी–
पापा को पानी ले आ
ओ बिटिया रानी ।



२८

खल्वाट

दो बीवियो क नेक
शौहर ो खान जावेद
        सिर हुआ था गजा क्यो
        बताते थे भेद
बडी बी चुनती थी
बाल काले छोटी सफेद।





२६

पडित का रोब

पण्डित जी पण्डिताइन पर
रोब जमाते है—
घर से हडताल कर
होटल मे खाते है—
आमलेट ओ मुगलई
मटन दबाते है ।



३०

सादा जीवन

धोती कुरता
टोपी खादी
लोटा एक
मुरादाबादी
ऊँचे ख्याल
जिदगी सादी




BAR
SHOP

३१

छदामी लाल

पैसे का भरोसा हो तो
खाता है मार तक–
दोडता फिरता हे
होटल से बार तक
छदामी लाल सेठ का
जीवन है साथक ।

३२

श्रीधर पुनिया

मित्र हमारे
श्रीधर पुनिया
पैदल घूमे
सारी दुनिया
हानो-लू-लू
कुस्तुन्तुनिया



३३

अपना विषय छोडकर

प्रोफेसर बजरग जी
रोज भग छानते–
        अपना विषय छोडकर
        सभी विषय जानते–
नियमित पढाते नही
अतिरिक्त क्लास माँगते ।



३४

क्रिकेट के नियम

क्रिकेट के नियम
बडे कडे है
        किंतु फील्डर्स के
        बडे मजे है
एक के खिलाफ
ग्यारह खडे है।




WOMEN
LIBER-

३५

ड्राइग रूम

बबूल के कॉटो मे—
मक्की के फूल
        मिट्टी की छिपकली
        परदे मेरून
एक अदद कैक्टस
तैयार ड्राइग रूम ।



३६

श्रीमती डोरिस

आजकल बहुत परेशान
रहती है श्रीमती डोरिस
        हो गया है बेचारी को
        ऐजाइना पेक्टोरिस
याद करती है आह भरती है
ओ ! जॉन हाय ! मौरिस।




शब्द शब्द शब्द शब्द शब्द शब्द

३७

शाब्दिक रेवडिया

बन जाती हे शब्दा से भी
रवडियॉ
और इसी मे बरक्कन है
बड मियॉ ।
जी हॉ जी जी हॉ जी
हॉ जी जी हॉ–

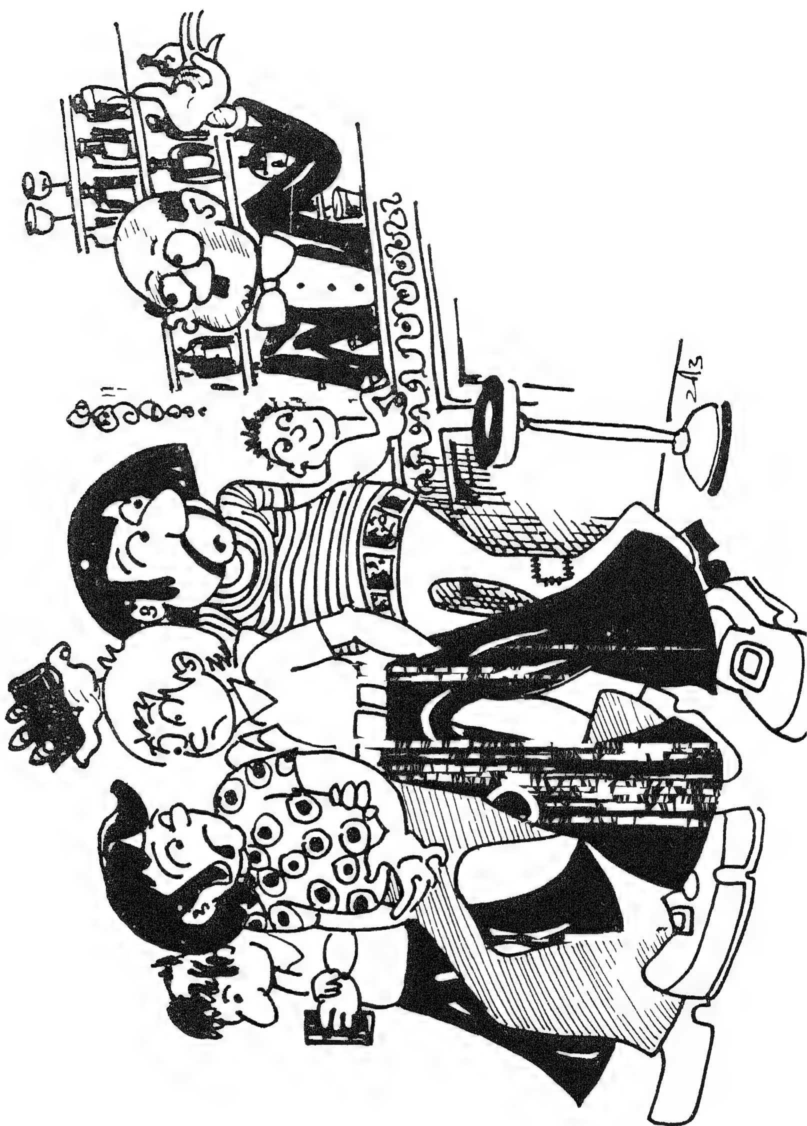


३८

झा साहब

हमारे दफ्तर मे
बडे बाबू है झा साहब
स्वय को समझते हे
बडे तीस मारखॉ साहब
हॉ तो हॉ ना को भी
कहते है हॉ साहब





३९

डेण्डी

बार मे पहुँचे पॉच
कॉलेज के डैण्डी–
        विस्की का दाम सुन
        तबियत हो गई ठण्डी–
खरीद कर निकल आए
चॉकलेट कैण्डी ।



४०

श्री बोरकर

किसी तरह आमत्रित हुए है
जोड ताड कर
        बेठे हे स्टेज पर
        मनहूसियत ओढकर
पूरी हास्य गोष्ठी के
व्यग्य है श्री बोरकर।





४१

मोल भाव

बीवी ने मेरी
सब्जी ठहराई–
        दस रुपए किलो की
        छ मे तुलवाई–
फिर भी वह कुजडी
दो रुपए ठग लाई ।



४२

तेवर भाभी के

देखकर भाभी के
चढते हुए तेवर
        सिर पिटा कर रह गए
        बेचारे देवर
और भाई साहब के
ऊपर पॉव नीचे सर





४३

उनकी तटस्थता

बैठे है जीप मे
या फोन पर व्यस्त है–
        कोई काम सौपिये
        सबमे अभ्यस्त है–
दाखिल हर मामले मे
लेकिन तटस्थ है ।



४४

बारात

मत्री महोदय शहर मे
नायाब हो गए है
        बदले हुए अब ऐसे
        हालात हो गए है
बगले से निकलते ही
बारात हो गए है





४५

कबूतर लडाते थे

भूखो जो मरते थे
सो काजू चबाते है–
        नीति-राजनीति की
        बाते बनाते है–
कबूतर लडाते थे
सो कबूतर उडाते है ।



४६

नोन, तेल, लकडी

चुटकियॉ बजाते है
हॉकते है व्योम की
        सस्कृति बखानते है
        पैरिस की रोम की
फिक्र नही रत्ती भर
लकडी तेल नोन की





४७

राग दरबारी

मित्र एक क्वॉरा था
कृष्णमाचारी–
        रियाज करता था
        राग दरबारी–
बीबी लाया
मारा गया ब्रह्मचारी ।



४८

लौटरी

भूतनाथ मास्टर
सिखाते है भौतिकी
        सोचते है जबसे
        उन्होने की है नौकरी
शादी रचा ले
अगर मिल जाए लौटरी





४६

जिह्वा परस्त

मित्र एक प्रोफेसर
पढाते है हिस्ट्री—
        जिह्वा-परस्त वे
        खाते मावा-मिश्री—
विद्यार्थी उनके पुरुष से
ज्यादह स्त्री ।

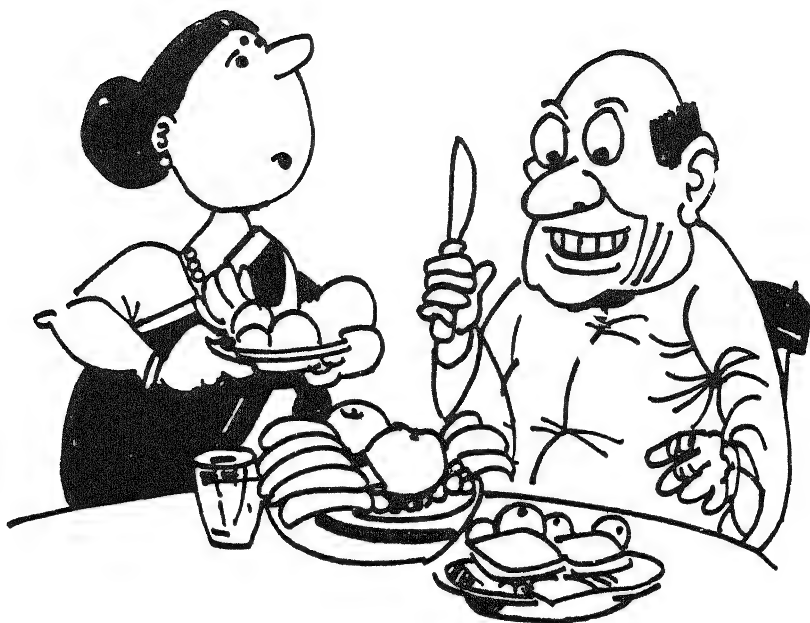


५०

ऑफ-साइड

चाहे कम हो चाहे
ज्यादह हो हाइट मे
        बहुत थोडे है जो
        आ पाते है लाइट मे
कुछ गली मे खेलते है
कुछ ऑफ—साइड मे





५१

उपवास

मेज पर रकाबियाँ
सजती है फलाहार की–
        खुशबुएँ उठती है
        केले सतरे अनार की–
अन्न नही खाता
मै शाम सोमवार की ।



५२

खूबसूरत भूल

आया मौसम माघ का
मधुबन फूले फूल
        छोटी बेबी सो गई
        बच्चे है स्कूल
आओ बैठो पास पिया
फिर हो जाए कुछ भूल





५३

मरदूद

मेवे मे मूगफली
फलो मे अमरूद–
        फूलो मे गोभी
        मरदो मे मरदूद–
सभी जगह आजकल
इन्ही की है पूँछ।



५४

हसने की चीज

वक्त पडने पर बनाता
गधे को अजीज है
        दुनिया मे सिर्फ आदमी
        हँसने की चीज है
खाता है करेला
और कहता लजीज है।




PRINCIPAL

५५

मुस्करा दिए

मैने पूछा सवाल
वे मुस्करा दिए–
        मैने माँगा जवाब
        वे मुस्करा दिए–
फिर मुझे आया ताव
वे मुस्करा दिए ।



५६

भीजी सारी सेज

सावन बरसे झूम के
कभी रिमझिम कभी तेज
        छत चूती है सावरे
        भीजी सारी सेज
जल्दी से कोई चपरासी
पी डब्लू डी भेज।





५७

एकात-सुख

वो गई मैके तो
रहे हम अकेले–
        खाना नही खाया तो
        खा लिए केले–
रोज हुई बैठके
और दड पेले।



५८

एकात-दु ख

अकेलेपन का जो
हादसा ह्आ था
        उससे वह इस कदर
        सहमा हुआ था
कि इस बार
जुडवॉ पैदा हुआ था।





५९

उर्दू मे दोहे

शायर श्री अनवर हुसेन
हिन्दी पढाते है
        प्रत्येक पक्ति शब्द-ब-शब्द
        समझाते है
उर्दू मे दोहे
गजल हिन्दी मे सुनाते है ।



६०

मफाई लुन

लगा है जबसे उन्हे
शायरी का घुन
        काई भी मिल जाय
        तो कहते है सुन
मफाई लुन मफाई लुन
मफाई लुन ।





५६

उर्दू मे दोहे

शायर श्री अनवर हुसेन
हिन्दी पढाते है
        प्रत्येक पक्ति शब्द-ब-शब्द
        समझाते है
उर्दू मे दोहे
गजल हिन्दी मे सुनात है ।



६०

मफाई लुन

लगा है जबसे उन्हे
शायरी का घुन
        कोई भी मिल जाय
        तो कहते है सुन
मफाई लुन मफाई लुन
मफाई लुन ।





६१

करबा चौथ

श्रीमती हमारी आज
करवा चौथ बरती है–
        बडी बेसब्री से चॉद का
        इन्तजार करती है–
मै कहता चाद घर बैठा आपका
क्यो मरती है ?

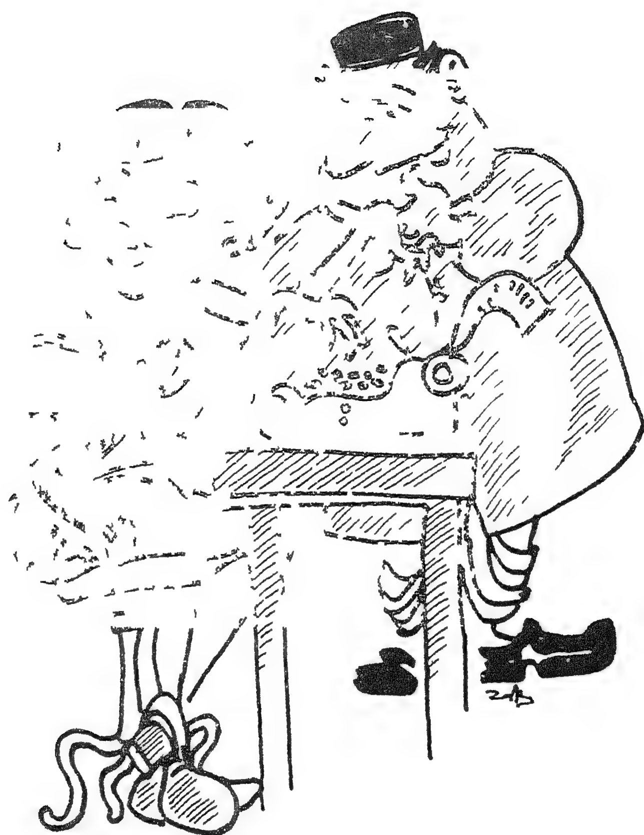


६२

नहीं जाना

दारा हो या
सोहराब गामा
        कौन है जिसे
        वहॉ नही जाना
मगर यह नही जाना
तो नही जाना





६३

कद्दू के सामने

सेठ जी को देखकर
पी० ए० शरमा गई–
        कतरा कर देखा
        और देख कतरा गई ।
कद्दू के सामने
ककडी बल खा गई–



६४

श्रीमती गधे

ड्राइग रूम मे विराजमान है
श्रीमती गधे
        हाथो मे सलाइयाँ है
        उचकाती है कधे
उलटा सीधा करती है
और डालती हे फदे ।





६५

कैप्टन विजयवर्गी

हमारे एक पडोसी थे
कैपटन विजयवर्गी
चाय के ऊपर पिया शरबत
हो गई सर्दी–
झट से उठे और डाट ली
मिलिट्री की वर्दी–



६६

दर्जी को अलर्जी

हमारे पडोस मे एक
रामलाल दर्जी है
कई रोज से बेचारे को
हो गई सर्दी है
डाक्टर की राय मे
उसे कपडे से अलर्जी है।





और अत मे
कुछ दार्शनिक तिपाइयॉ

६७

महाभारत कर

श्रीमदभगवद गीता को पढकर
अतत रनबीर पहुँचे इस निष्कर्ष पर–
निष्काम बना रह पर महाभारत कर।



६८

चार्वाक

आज की दुनिया मे क्या मोर क्या काग
सभी बोलते है उनकी बोली बेवाक
देखते ता गदगद हो जाते चार्वाक।



६६

उद्दालक

श्वेतकेतु से बोले ऋषि उद्दालक
उपवास नही है उपाय बालक
अन्न ही होता है मन का चालक



७०

बुद्ध

सबके सब और प्रश्न निरर्थ है
दार्शनिक समस्याएँ व्यर्थ है
चार ही केवल आर्य सत्य है।



७१

साख्य-पडित

साख्य दर्शन को पढकर
वे धन्य हो गए
चितन की धरती मे
दो बीज बो गए
सबको प्रकृति समझा
खुद पुरुष हो गए



७२

सप्तभगी नय

एक नही कितने ही
पात्र समय देश है
बुद्ध महावीर शकर
और कम्बलि केश है
भगिमाएँ सप्तभगी
नय की अनेक है।



७३

थेलीज

थेलीज एक दार्शनिक था यूनानी
दर्शन मे अपने करता था मनमानी
ठोस का भी उदगम बताता था पानी



७४

सुकरात

उसने अपना जीवन अपनी तरह जिया
सुकरात को जो ठीक लगा वही किया
मौत नही जिदगी के लिए जहर पिया।



७५

जीनोफेनीज

थे ता अच्छी तरह
जानता था जीनोफेनीज
कि कछुए को पकड
कर ही रहेगा एकेलीज
लेकिन दूरियॉ नापना
कोई चलना नही हे प्लीज।



७६

डेकार्ट

मन को मन और शरीर को शरीर बोलता था
दोनो ही तत्वो को अलग अलग तोलता था
डेकार्ट डेकार्ट था क्योकि वह सोचता था।



७७

बर्कले

प्रकृति तो केवल एक मन का विकार हे
और वस्तुओ का होना मात्र विज्ञान है
शायद बर्कले भी एक पुरुष नही विचार हे।



७८

ह्यूम

चढा कर अनुभववाद का चोगा
खिडकी से झॉक कर ह्यूम बोला
वहॉ न मै हूॅ न मेरा चोला ।



७६

शोपेनहावर

निराशा और दु ख के मामले मे
उसका विचार पक्का था
सारी दुनिया मे उसे
ॲधेरा ही ॲधेरा दिखता था
बेचारे शोपेनहावर का प्रकाश
सिर्फ एक सफेद कुत्ता था।



८०

विलियम जेम्स

अर्थक्रियावाद दर्शन नही
एक दार्शनिक मिजाज हे
इसके प्रवर्तक विलियम जेम्स
पर अमेरिका को नाज हे
सत्य कोई कोरा विचार नही
नकद काम–काज है।

